IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कार्ल मार्क्स की प्रमुख अवधारणा और फ्रेडरिक एंगेल्स की पुस्तक श्परिवार संपत्ति और राज्य की उत्पत्तिश के विशेष संदर्भ के आधार पर विश्लेषण।

Raghuwar Lal, M.A, M.Ed, Lecturer, Shyam Babu +2 High School Sanyas Ashram, Gaya.

Keshav Chandra, Ph.D Scholar, Japanese Division, Department of East Asian Studies, University Of Delhi

Abstract-

एंगेल्स ने घोषणा की- मार्क्स ने दो महान खोज कीं। मानव इतिहास के विकास का कानून और बुर्जुआ समाज की गति का कानून। मार्क्स के विचारों का प्रभाव बहुत बड़ा है। मार्क्स की उत्कृष्ट कृति दास कपिटल "मजदूर वर्ग का बाइबिल" है। मार्क्स ने उनका इस्तेमाल अपने द्वंद्वात्मक तरीके के अनुसार यह तर्क देने के लिए किया कि बुर्जुआ समाज हर सामाजिक जीव की तरह विकास के अपने अपरिहार्य मार्ग का अनुसरण करे। अलगाव की धारणा मार्क्स के शुरुआती लेखन की केंद्रीय अवधारणा है जो पूंजीवादी समाज की कड़वी सच्चाई को दिखाती है। कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो मार्क्स और एंगेल्स के समाज और राजनीति के स्वरूप के बारे में बतलाता है और मार्क्सवाद के लक्ष्यों को समझाने का एक प्रयास है। एंगेल्स ने अपने पुस्तक परिवारए निजी संपत्तिए और राज्य की उत्पत्ति में राज्य पर मार्क्सवादी सिद्धांत के विकास में एक महत्वपूर्ण मंच का प्रतिनिधित्व कराया है। इस पुस्तक में एंगेल्स ने यह दिखलाया है कि किस प्रकार आर्थिक कारणों की वजह से परिवारए समाज और राज्य के शोषणकारी वर्गीय चरित्र का निर्धारण होता है।

Key Words- मार्क्सवाद, एंगेंल्स, समाजवाद, तरुण मार्क्स, अलगाव एलुईस एच मॉर्गन, क्रांतिए पूंजीवाद, परिवार, समाज, राज्य।

प्रस्तावना.

मार्क्सवाद समाजवाद का वह रूप है जिसे कार्ल मार्क्स (1818.1883द्ध ने प्रस्तुत किया और जिसमें उनके सहयोगी एंगेल्स (1820.1895द्ध का भी विशेष योगदान रहा। कार्ल मार्क्स मात्र दार्शनिक ही नहीं थे बल्कि एक क्रांतिकारी भी थे जो इस संसार को बदलना चाहता थे । मार्क्स ने 19 वीं शताब्दी के यूरोप में उदारवादी चिंतन को चुनौती देकर नए सामाजिकए आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों को आगे बढ़ाया जिससे मार्क्सवादी चिंतन परम्परा की शुरुआत हुई ।

कार्ल मार्क्स की दो प्रसिद्ध कृतियाँ – श्कम्युनिस्ट घोषणा पत्रश ;1848द्ध एवं ष्दास कैपिटलष ;जिसका प्रथम खंड 1867 में प्रकाशित हुआ और इसके द्वितीय एवं तृतीय खंड एंगेल्स के सम्पादन में क्रमशः 1885 एवं 1894 में कार्ल मार्क्स की मृत्यु के पश्चात प्रकाशित हुए) के माध्यम से उसने तत्कालीन समाजवाद में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन करके नई विचारधारा की नींव रखी । पहलाए उसने काल्पनिक समाजवाद का खंडन करते हुए वैज्ञानिक समाजवाद की शुरुआत की । उसने इतिहास के दर्शन के आधार पर समाज के विकास की व्याख्या की और उसे साम्यवादी अवस्था तक पहुँचाने के लक्ष्य पर प्रकाश डाला । दूसराए उसने सर्वहारा समाज का सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसमें समकालीन दरिद्रता और अन्याय से पीड़ित समाज के पुनर्निर्माण की योजना प्रस्तुत की । यहाँ कार्ल मार्क्स ने औद्योगिक क्रांति से पैदा हुए सामाजिकए आर्थिक एवं राजनीतिक हालातों में मजदूर वर्ग को नई चेतना देकर साम्यवादी समाज की स्थापना की योजना प्रस्तुत की । वस्तुतः मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था के विकासए उसके शोषण की कार्यपद्धति एवं स्तर का व्यापक अध्ययन करके मजदूर वर्ग को पूँजीपतियों के विरुद्ध संघर्ष का रास्ता दिखाया और पूँजीवाद के शोषण से मुक्त होने के लिए व्यावहारिक योजना प्रस्तुत की । प्रो. लास्की के अनुसार मार्क्स ने एक साथ ही नए पूँजीवाद के लिए समाधिलेख लिखा और उसके परिणाम की भविष्यवाणी की द्य वस्तुतः मार्क्सवाद पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह मात्र ही नहीं है बल्कि इस व्यवस्था का एक सशक्त विकल्प भी प्रस्तुत करता है। राजनीतिक दर्शन के लिए मार्क्स का यह स्थायी तथा कालजयी योगदान है ।

मोटे तौर पर कार्ल मार्क्स के विचारों को दो मुख्य धाराओं के रूप में देखा जा सकता है । पहली धारा में उन विचारों के समुच्चय को रखा जाता है जिन्हें शास्त्रीय मार्क्सवाद के रूप में पहचाना जाता है । द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद;क्पंसमबजपबंस डंजमतपंसपेउद्धए ऐतिहासिक भौतिकवाद;डंजमतपंसपेजपब प्दजमतचतमजंजपवद द्धए वर्ग संघर्ष का सिद्धांत;जीमवतल वि ब्सें`जतनहहसमद्धए अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त;जीमवतल वि`नतचसने अंसनमद्धए वर्ग संघर्ष;बसें`जतनहहसमद्ध के सन्दर्भ में वर्ग चेतना की अवधारणाए क्रांति का सिद्धांत आदि शास्त्रीय मार्क्सवाद के प्रमुख सिद्धांत हैं । दूसरी धारा में मार्क्स के मानवतावादी चिंतन को रखा जाता है । मार्क्सवाद के मानवतावादी चिंतन का सर्वोत्तम विवरण मार्क्स की एक आरम्भिक कृति ष्इकॉनामिक्स एण्ड फिलॉसॉफिक मैनुस्क्रिप्टस ऑफ 1844 में मिलता है । परायेपन की संकल्पना (बवदबमचज वि`सपमदंजपवदद्ध मार्क्स की इस कृति का प्रधान विषय है । ये पांडुलिपियाँ लम्बे समय तक अज्ञात रहीं । 1927 तक ये पांडुलिपियाँ जर्मन सामाजिक लोकतंत्रवादियों के अभिलेखागार में पड़ी रहीं और 1932 में पहली बार जर्मन भाषा में प्रकाशित हुईं । तीन वर्ष बाद इनका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ । यहाँ कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद की आलोचनाए मुख्यतः उसके अमानवीय प्रभाव और श्रमिकों के परायेपन की दृष्टि से की है । दूसरे शब्दों मेंए पूँजीवादी शोषित अवस्था में मनुष्य प्रकृति से अपने समाज से यहाँ तक कि अपने आप से भी पराया हो जाता है । अतः उसके परायेपन को समाप्त करके अपनेपन की वापसी के लिए पूँजीवाद का अंत होना आवश्यक है। अतः इन पांडुलिपियों को तरुण मार्क्स (ल्वनदह डंतगद्ध की कृति मानकर मार्क्स के प्रौढ़ावस्था के चिंतन से कभी- कभी अलग किया जाता है। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि 1930 के दशक में जब मार्क्सवाद को हिंसात्मक क्रांति वर्ग संघर्ष और विरोध तथा लेनिन व स्टालिन के क्रूर तथा सर्वाधिकारवादी तरीकों के रूप में पहचाना जाता थाए इन्हीं दिनों कार्ल मार्क्स की ष्इकॉनॉमिक एण्ड फिलॉसाफिक मैनुस्क्रिप्ट्स ऑफ 1844ष के प्रकाशन से मार्क्सवाद मानवतावादी चेहरा प्रकाश में आया और इससे अनेक परवर्ती मार्क्सवादियों को नई दिशाओं में सोचने की प्रेरणा मिली।

मार्क्स और एंगेल्स के बाद भी बहुत से दार्शनिकोंए क्रांतिकारियों एवं टीकाकारों ने मार्क्सवाद के विकास में योगदान दिया है जिनमें वी.आई. लेनिनए आर.लक्समवर्गए एल. ट्रोटस्कीएएन.बुखारिनए जे.वी. स्टालिन और माओत्से तुंग प्रमुख है। इनके अतिरिक्त जी. लूकासए एंटोनियो ग्राम्शीए एच. मारक्यूस, एच. लेफ्यूरए जे.पी. सार्मे के योगदान से मार्क्सवाद समृद्ध हुआ है।

इन सभी ने मार्क्सवाद के सिद्धांतों और व्यवहार की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप व्याख्या की और इसको दर्शन बनाया। प्रस्तुत प्रलेख में मार्क्सवाद के विभिन्न सिद्धांतों का संक्षिप्त वर्णन है।

मार्क्स के दर्शन स्रोत.

एबेनसटीन के अनुसार अपनी खुद की कष्टपूर्ण और लंबी खोज में मार्क्स को अपना दर्शन किसी विचारक से नहीं मिला बल्कि उसने विभिन्न स्रोतों से एकत्र किया ।

गेटले के अनुसार मार्क्सवाद का मुख्य आधार ऐतिहासिक भौतिकवाद में वर्ग सिद्धांत का है। मार्क्सवाद का दूसरा आधार अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत है एवं मार्क्स का तीसरा आधार फ्रांसिसी क्रांति व फ्रांसिसी समाजवाद के तत्वों को शामिल करके बनाया गया है।

जर्मन विद्वानों का प्रभाव मार्क्स पर पड़ा। उसने समाज के विकास के लिए हीगल के द्वंद्वात्मक पद्धति को अपनाया और भौतिकवाद का विचार हीगलवादी फायर बॉक से लिया।

ब्रिटिश अर्थशास्त्रियों का चिंतन का प्रभाव मार्क्स पर देखा गया। उसने श्रम के मुख्य सिद्धांत को एडम स्मिथ रिकार्डो के सिद्धांत से अपनाया और उसके मुख्य सिद्धांत के आधार पर मार्क्स ने अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

फ्रांसीसी समाजवादियों का चिंतन उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व का सिद्धांत, श्रमिकों का उत्पादन व उनका शोषण करने वाले वर्ग के विनाश का सिद्धांत को मार्क्स ने फ्रांस चिंतन से प्राप्त किया। (स्मदपदए1964द्धण

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद;Dialectical Materialism):-

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत मार्क्सवाद का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत भौतिकवाद की मान्यताओं को द्वंद्वात्मक पद्धति के साथ मिलाकर सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने का प्रयत्न करता है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र में इस प्रश्न पर विचार किया जाता है कि सृष्टि का सारतत्व क्या हैस् इन प्रश्न के दो विरोधी विचार मिलते हैं : भौतिकवाद और अध्यात्मवाद । अध्यात्मवाद के अनुसार सृष्टि का सारतत्व आत्माए चेतना एवं विचार हैं । इसलिए प्रकृति और समाज का कोई स्वतंत्र भौतिक अस्तित्व नहीं है बल्कि सृष्टि चेतनाए आत्मा अथवा विचारतत्व के रूप में अभिव्यक्त होती है। चेतना अपने–आप में एक गतिशील तत्व है और भौतिक जगत एवं सामाजिक जीवन के सारे परिवर्तन चेतन तत्व की विभिन्न अवस्थाओं की अभिव्यक्ति मात्र हैं। दूसरी ओर भौतिकवाद के अनुसार जड़ पदार्थ ही सृष्टि का सार है और सामाजिक जीवन की कोई भी अवस्था जड़ पदार्थ की किसी विशेष अवस्था को अभिव्यक्त करती है। हेगेल (1770.1831द्ध के चिंतन में अध्यात्मवाद को अपनाया गया है। दूसरी ओर कार्ल मार्क्स ने भौतिकवाद में अपनी आस्था अभिव्यक्त की है।

हेगेल और मार्क्स दोनों ही इतिहास के अध्ययन के लिए द्वंद्वात्मक पद्धति को स्वीकार करते हैं। हेगेल के मतानुसार विकास का प्रथम तत्व वाद है। इस वाद का एक दूसरा पक्ष अर्थात इसका एक विपरित पक्ष भी है जिससे एक विरोधी तत्व पैदा होता है जिसे प्रतिवाद कहते हैं। इन दोनों के संघर्ष से एक तीसरी वस्तु पैदा होती है जिसे संवाद कहा जाता है। हेगेल और मार्क्स दोनों ही विकास की इस प्रक्रिया को स्वीकार करते है और मानते है कि यह प्रकिया सदैव सक्रिय रहती है। वास्तव में विकास की प्रक्रिया को लेकर जो समानता दोनों के विचारों में दिखाई देती है वह केवल ऊपरी है। दोनों ने इस विकास पद्धति के सम्बंध में जो विचार किया हैंए वे न केवल भिन्न है बल्कि एक–दूसरे के विपरीत भी हैं । स्वयं मार्क्स ने अपनी पद्धति की तुलना

हेगेल से करते हुए लिखा है कि ॰ मेरी द्वंद्वात्मक पद्धति हेगेल की पद्धति से न केवल भिन्न है बल्कि विपरीत भी है।॰ हेगेल के लिए विचार की प्रक्रिया जिसे वह विश्वात्मा के नाम से स्वतंत्र विषय के रूप में परिवर्तित कर देता हैए वास्तविक संसार की उत्पत्ति का कारण है तथा वास्तविक संसार इस विश्वात्मा का बाह्य प्रासंगिक स्वरूपमात्र है द्य इसके विपरीत मेरे लिए विश्वात्मा अथवा विचार मानव मस्तिष्क द्वारा प्रतिबिम्बित विचार के रूप में भौतिक संसार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अत: मार्क्स के अनुसार इस परिवर्तन क्रम में भौतिक तत्व प्रधान है न कि कोई विचार तत्व जैसा कि हेगेल ने कहा है।

मार्क्स और हेगेल के विचारों में समानताओं और विभिन्नताओं को और अधिक स्पष्ट करते हुए सेबाइन ने लिखा है कि मार्क्स का दर्शन दो दृष्टियों से हेगेल से मिलता है। पहला- एक तो मार्क्स ने हेगेल की द्वंद्वात्मक पद्धति को कायम रखा और आर्थिक नियतिवाद के रूप में व्याख्या की। दूसरा- विचार सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर होते हैं। हेगेल के चिंतन में यह धारणा जरा सा बिखरे रूप में मिलती है। मार्क्स ने इसे क्रमबद्ध किया और उसे आधुनिक चिंतन में प्रतिष्ठित स्थान दिया।

अत: मार्क्स के अनुसार - मनुष्य सामाजिक उत्पादन का जो कार्य करता है उसके दौरान वे आपस में एक निश्चित प्रकार के सम्बंध कायम कर लिया करते हैं। इन सम्बंधों के बिना उनका काम नहीं चल सकता। अत: वे अपरिहार्य होते हैं और मनुष्यों की इच्छा से स्वतंत्र होते हैं। उत्पादन के ये सम्बंध उत्पादन के भौतिक तत्वों के विकास की विशिष्ट अवस्था (दास युगए सामांती युगए पूँजीवादी युग) के अनुरूप हुआ करते हैं। उत्पादन के इन सम्बन्धों के योग से ही समाज का आर्थिक ढाँचा बनता है और वही ढाँचा असली नींव होता है जिस पर विधिक (कानूनी) और राजनीतिक व्यवस्थाओं का निर्माण होता है और इसी ढाँचे के अनुरूप मनुष्यों की सामाजिक चेतना का निर्धारण होता है। भौतिक जीवन में उत्पादन की जो पद्धति होती हैए उसी से जीवन की सामाजिकए राजनितिक और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं का सामान्य रूप निर्धारित होता है। मनुष्यों का जीवन उसकी चेतना से निर्मित और निर्धारित नहीं होताए बल्कि उसके सामाजिक जीवन से उनकी चेतना बनती है। समाज के विकास में एक ऐसी अवस्था आ जाती है जबकि उत्पादन के भौतिक तत्वों और विधमान उत्पादन के सम्बंधों- अर्थात सम्पत्ति विषयक सम्बंधों के अंतर्गत वे तत्व पहले से कार्य करते आए हैं दृ के बीच संघर्ष उठ खड़ा होता है।

मार्क्स ने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सहारा लेते हुए दो प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किए जो इस प्रकार हैं :

पहला लक्ष्य यह था कि वह क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग की पार्टी के लिए उचित रणनीति का निर्माण करना चाहता था तथा दूसरा प्रमुख लक्ष्य यह था कि वह इसके आधार पर इतिहास को समझाना और अन्य आर्थिक तथा सामाजिक सिद्धांतों की आलोचना करना चाहता था। द्वंद्वात्मक पद्धति को अपनाने के पीछे मार्क्स का एक और लक्ष्य यह भी था कि इसके आधार पर रूढ़िगत रूप से प्रचलित तथाकथित निरपेक्ष मूल्यों का खण्डन किया जा सकता था और वास्तविक तथा आभासी के बीच हेगेल द्वारा प्रतिपादित भेद को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जा सकता था। द्वंद्वात्मक पद्धति की भौतिकवादी व्याख्या का यह अभिप्राय था कि धार्मिक रूढ़ियों और धार्मिक सत्ता के प्रतीकात्मक अर्थों से मुक्त हुआ जाए और यह स्पष्ट समझा जाए कि धर्म समाज की एक बहुत बड़ी प्रतिक्रियावादी तथा अनुदार शक्ति रहा है।(शर्मा, 2010)

इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या(Materialistic interpretation of History):-

ऐतिहासिक भौतिकवाद - मार्क्सवाद के अनुसार ऐतिहासिक भौतिकवाद को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के पूरक सिद्धांत के रूप में माना गया है। ऐतिहासिक भौतिकवाद आर्थिक व्याख्या का इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या भी कहा जाता है। मार्क्स के अनुसार इतिहास में जो भी परिवर्तन में घटनाएं होती है उसके पीछे आर्थिक कारण रहती है। मार्क्स ने मानव इतिहास के विकास पर आर्थिक तत्व का प्रभाव स्पष्ट करते हुए इसकी अवस्थाओं का उल्लेख किया है।

1 आदिम साम्यवादी व्यवस्था

2 दास अवस्था

3 सामान्य अवस्था

4 पूंजीवादी व्यवस्था

5 सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद

6 साम्यवादी व्यवस्था

मार्क्स के अनुसार समाज के दो भाग होते हैंए 1ए आधार (जतनबजनतमद्ध 2ए अधिरचना;नचमतेजतनबजनतमद्ध

आधार के अन्तर्गत मार्क्स ने अर्थव्यवस्था में उत्पादन प्रणाली को शामिल किया है। अधिरचना के अन्तर्गत सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक अवस्था को शामिल किया है। शोषक वर्ग- मार्क्स के अनुसार अर्थव्यवस्था में प्रणाली पर जिसका नियंत्रण होता है उसे शोषक वर्ग कहतें है। शोषित वर्ग- मार्क्स के अनुसार जो वर्ग शोषक वर्ग के अधीन कार्य करता है उसे शोषित वर्ग कहते हैं।

इतिहास की आर्थिक व्याख्या के निष्कर्ष- मानव जीवन में सभ्यता का विकास ईश्वर में महापुरुष के कार्यों से नहीं होता है बल्कि आर्थिक तत्वों के कार्यों से होता है । प्रत्येक युग में सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था पर उसी का नियंत्रण होता है जिसका आर्थिक व्यवस्था पर नियंत्रण होता है। आर्थिक परिवर्तनों से राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन होता है । इतिहास की आर्थिक व्यवस्था से पूंजीवाद के अंत में साम्यवाद के आगमन की घोषणा करता है।(संधु,1985)

वर्ग संघर्ष का सिद्धांत

मार्क्स का अन्य सिद्धांत वर्ग सघंर्ष का सिद्धांत है। मार्क्स ने कहा है अब तक के समस्त समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। कुलीन और साधारण व्यक्ति, सरदार और सेवक, पूंजीपति और श्रमिक निरंतर एक दूसरे के विरोध में खड़े रहे है। उनमें आबाध गति से संघर्ष जारी है। मार्क्स इससे निष्कर्ष निकाला है कि आधुनिक काल में पूंजीवाद के विरूद्ध श्रमिक संगठित होकर पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर देंगे तथा सर्वहारा वर्ग की तानाशाही स्थापित हो जायेगी।(शर्मा,2010)

अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत -

मार्क्स ने अपनी पुस्तक दास केपिटल में अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत की विवेचना की है। मार्क्स की मान्यता है कि पूंजीपति श्रमिको को उनका उचित पारिश्रमिक न देकर उनके श्रम का सम्पूर्ण लाभ स्वयं हड़प लेता है। मार्क्स ने माना है कि किसी वस्तु का मूल्य इसलिए होता है क्योंकि इसमें मानवीय श्रम लगा है। दूसरे शब्दो में वस्तु के मूल्य का निर्धारण उस श्रम से होता है जो उस वस्तु के उत्पादन पर लगाया जाता है। जिस वस्तु पर अधिक श्रम लगता है उसका मूल्य अधिक और जिस वस्तु के उत्पादन पर कम श्रम लगता है उसका मूल्य कम होता है इस प्रकार मार्क्स का विचार है कि किसी वस्तु का वास्तविक मूल्य वह होता है जो उस पर व्यय किये गये श्रम के बराबर होता है। किन्तु ,जब वह वस्तु बाजार में बिकती है तो वह अधिक मूल्य पाती है। इस प्रकार वस्तु के बाजार मूल्य व वास्तविक मूल्य के अंतर को पूंजीपति स्वयं हड़प लेता है। मार्क्स की दृष्टि में जो धन पूंजीपति द्वारा अपने पास रख लिया गया वही धन अतिरिक्त मूल्य कहलाता है। स्वयं मार्क्स के शब्दो में ञ्अतिरिक्त मूल्य इन दो मूल्यों का अंतर है जिसे श्रमिक पैदा करता है और जिसे वह वास्तव में प्राप्त करता है।ञ् इस प्रकार वास्तविक मूल्य और विक्रयमूल्य का अंतर ही अतिरिक्त मूल्य है। इस सम्बन्ध में मार्क्स ने लिखा है- यह वह मूल्य है जिसे पूंजीपति श्रमिको के खून पसीने की कमाई पर पथ-कर के रूप में वसूल करता है।(डग.2006)

क्रांति का सिद्धांतरू.

॰दार्शनिकों ने अब तक विश्व की व्याख्या की हैए सवाल यह है कि इसको कैसे बदला जाए ॰ ।17 मार्च 1883 को मार्क्स की मृत्यु पर उनकी क्रब के एक ओर खड़े होकर उनके सहयोगी एंजिल्स ने अपने अविस्मरणीय भाषण में कहा था कि सभी कुछ होने से पहले मार्क्स एक क्रांतिवादी था और उनके जीवन का ध्येय किसी न किसी तरह से पूँजीवादी समाज का और इसके द्वारा अस्तित्व में लाई गई राज्य की संस्थाओं को उखाड़ फेंकना है जिससे आधुनिक सर्वहारा की आजादी में योगदान किया जा सके । (संधु, 1985)

वस्तुत: कार्ल मार्क्स पहला राजनीतिक चिंतक है जिसने इस बात पर बल दिया है कि जब उत्पादन के भौतिक तत्वों और विद्यमान उत्पादन के संबंधों के बीच संघर्ष उठ खड़ा होता हैद्य दूसरे शब्दों में, ये संबंध उत्पादन की शक्तियों के विकास पर जंजीर की तरह कार्य करने लगते हैं तभी सामाजिक क्रान्ति युग आरम्भ होता है। मार्क्स के अनुसार आधुनिक युग में इस समय तक की मुख्य क्रांतियों की व्याख्या दीर्घकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक विकास के फल के रूप में की जा सकती है जिसमें आर्थिक शोषण एवं सम्पत्ति के स्वामित्व के नए रूप में निरंतर विकास होता है। अत: राल्फ मिलिबेंड ने अपनी पुस्तक मार्कसिजम एंड पॉलिटिक्स (डंतगपेउ ंदक च्वसपजपबेद्ध में लिखा है कि इन सबका परिणाम यह होता है कि राजनीतिक क्रांति सामाजिक क्रांति का रूप ले लेती है। जब इसमें सामाजिक वर्गों का विरोध निहित होता है। (डपसपइंदकरू1977:154) वर्ग संघर्ष और उसके फलस्वरूप होने वाली क्रांति को किसी व्यवस्था पर थोपा नहीं जा सकता है और यह किसी भी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का तर्कसंगत परिणाम होती है। किसी भी देश -काल एवं राजनीतिक व्यवस्था में आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से प्रभुत्वशाली वर्ग अपनी इच्छा से अपनी शक्ति का त्याग नहीं करता। इस प्रकार कोई भी परिवर्तन स्वत: नहीं हो जाता। इसके लिए उत्पीड़ित वर्ग को संगठित क्रांतिकारी गतिविधियों के द्वारा किया जा सकता है।

वस्तुत: मार्क्सवादी परम्परा में क्रांति कोई षडयंत्र नहीं है। यह तर्क संगत स्वाभाविक और अवश्यंभावी घटना है तथा सामाजिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण साधन है। इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन की शक्तियों का विकास धीरे-धीरे होता है किंतु एक अवस्था में पहुँचकर पुराने सामाजिक सम्बंधों पर उसका दबाव असहनीय हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में जो सामाजिक वर्ग पुरानी व्यवस्था की जंजीरों से जकड़ा होता हैए उसमें वर्ग चेतना का विकास होता है। जिससे वह संगठित होकर एक ही झटके में पुराने प्रभुत्वशाली वर्ग को सत्ता से हटाकर उसके साथ जुड़ी हुई सारी संस्थाओं को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत पुराना पराधीन वर्ग सत्ता प्राप्त कर लेता है और सम्पूर्ण राजनीतिक प्रणालीए सामाजिक संस्थाओं , कानून एवं नैतिक आदर्शों का पुनर्निर्माण करता है। इस प्रकार क्रांति सामाजिक परिवर्तन का अनिवार्य माध्यम है। मार्क्सवादी विचार परम्परा के अनुसार सामंतवाद से समाजवाद के युग में प्रवेश के लिए दो क्रांतियाँ आवश्यक थीं- बुर्जुआ क्रांति एवं सर्वहारा क्रांति। कार्ल मार्क्स सामंतवाद के ढेर पर पूँजीवाद के उदय को एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में उसकी प्रशंसा करता है जिसे वह बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रांति कहता है। बुर्जुआ क्रांति के अंर्तगत एक अल्पसंख्यक वर्ग के स्थान पर दूसरे अल्पसंख्यक वर्ग की स्थापना कर दी जाती है। सामंती समाज का स्थान बुर्जुआ शासन ले लेता है। इसमें नए शासक वर्ग के हितों के अनुसार राजनीतिक एवं अनन्य संरचनाओं को नए तरीके से ढ़ालने की राज्य शक्ति का उपयोग होता है। यहाँ शासित बहुसंख्यक वर्ग या तो नए शासक वर्ग की सहायता करता है अथवा निष्क्रिय हो जाता है लेकिन यह वर्ग शासक वर्ग से सहमत रहता है (डपबींमस स्अंदेरू 1975:138)

अलगाव की अवधारणा

अपनी द्वंद्वाद की अवधारणा की भाँति कार्ल मार्क्स ने ❛अलगाव के सिद्धांत❜ को भी हेगेल और लुड्विग फेयरबाख से लिया है। हेगेल के अनुसार मनुष्य का लक्ष्य आत्मानुभूति अथवा स्वाधीनता प्राप्त करना है। उसके सभी मानवीय क्रियाकलाप इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किए जाते हैं। किंतु इस लक्ष्य की प्राप्ति में आवश्यकता एवं अलगाव रूपी दो तत्व बाधा डालते हैं। जहाँ ❛आवश्यकता❜ से तात्पर्य प्राकृतिक और भौतिक बाधाओं से हैए वहाँ ❛अलगाव❜ कर्म से कर्ता को अलग करता है। मनुष्य स्वयं का स्वामी बनना चाहता है किंतु इसके स्थान पर वह दूसरों के हाथों में कठपुतली बनकर रह जाता है। अतः अपने स्वयं को अनुभव न कर पाना ही मानवीय अलगाव का मुख्य कारण है। लुड्विग फेयरबाख़ ने हेगेल के बाद अलगाव का सिद्धांत विकसित किया। उसने अपनी महत्वपूर्ण कृति ❜द एसेंस ऑफ क्रिश्चएनिटी❜ ;1841) में यह विचार प्रस्तुत किया कि धर्म मनुष्य के मन की कोरी कल्पना है। वह मानवीय कामनाओं का प्रतिबिम्ब है। सम्पूर्ण आध्यात्मिक विकास का ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है बल्कि उसका सम्बंध मनुष्य से है। अतः सारे मानवीय प्रयासों का ध्येय मानव कल्याण होना चाहिए। लुड्विग फेयरबाख़ की मान्यता है कि धार्मिक अंधविश्वास ही मनुष्य के अलगाव का स्रोत है। उसने आत्मप्रेम के धर्म द्वारा देवत्व की मनुष्य में पुनर्स्थापना करके इस समस्या के समाधान का सरल सुझाव दिया। वस्तुतः फेयरबाख़ ने हेगेल के दर्शन की जो मीमांसा प्रस्तुत की उसमें तरुण मार्क्स और एंगेल्स को विशेष रूप से प्रभावित किया। जब से मार्क्स की कृतियाँ विशेषकर ❛इकॉनॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैनुस्क्रिप्ट्स ऑफ❜ ;1844) प्रकाश में आईए तभी से तरूण मार्क्स के मन पर फेयरबाख़ के प्रभाव को विशेष महत्व दिया जाने लगा। इतना ही नहींए ऐसा भी माना जाता है कि फेयरबाख़ के दर्शन से प्रभावित होकर ही कार्ल मार्क्स ने साम्यवाद की संकल्पना को इस रूप में प्रस्तुत किया कि पूँजीवाद के अंर्तगत सर्वहारा के मन में अपनी रचना और पर्यावरण से अलगाव पैदा हो जाता है। जबकि साम्यवादी समाज के अर्न्तगत मनुष्य अपनी प्रकृति का स्वतंत्र विकास कर सकते हैं। वस्तुतः कार्ल मार्क्स ने अलगाव के विषय को हमेशा एक भिन्न अर्थ प्रदान किया। उनके अनुसार अलगाव न तो मनुष्य की आत्मा को अनुभव करने में है और न ही धार्मिक अंधविश्वासों काए बल्कि इसको मनुष्य के मर्म और मानवीय गतिविधि में असफलता का परिणाम खोजा जा सकता है। (संधु, 1985)

यंग मार्क्स की प्रमुख कृति ❛इकॉनॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिक मैनुस्क्रिप्ट्स ऑफ 1844❜ का प्रमुख विषय अलगाव❜ ;सपमदंजपवदद्ध है। इन पांडुलिपियों में कार्ल मार्क्स ने अपनी परवर्ती रचनाओं की तरह पूँजीवादी समाज की कड़ी आलोचना की है और उसके स्थान पर साम्यवादी समाज की स्थापना की वकालत की है। कार्ल मार्क्स की परवर्ती रचनाओं में पूँजीवादी प्रणाली का विश्लेषण उत्पादन सम्बंधोंए अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांतए वर्ग संघर्ष अथवा सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के दृष्टिकोण से किया है। इन पाण्डुलिपियों की विशिष्टता इस बात में है कि यहाँ कार्ल मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना मुख्य रूप से उसके अमानवीय स्वरूप और मजदूरों के परायेपन के दृष्टिकोण से किया है। यहाँ कार्ल मार्क्स का मुख्य तर्क यह है कि शोषण पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था के अंर्तगत मनुष्य का अपनापन नष्ट हो जाता है। वह प्रकृति से, अपनी रचना से और यहाँ तक कि अपने आप से भी पराया हो जाता है। अतः उसके अपनेपन की वापसी के लिए पूँजीवाद का अंत करना आवश्यक है। (पइपकद्ध

परिवारए निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्तिय.

परिवारए निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा लिखा गया था । फ्रेडरिक एंगेल्स ने 1884 में यह किताब लिखा था । एंगेल्स ने यह आंशिक रूप से कार्ल मार्क्स द्वारा मानव विज्ञानी लुईस एच मॉर्गन के ❜प्राचीन समाज❜; ।दबपमदज ैवबपमजलद्ध या (त्मेमंतबीमे पद जीम स्पदमे वि भ्नउंद च्तवहतमे तिवउ ैंअंहमतलए ठंतइंतपेउ जव ब्पअपसप्रंजपवदए पितेज चनइसपीमक पद स्वदकवद पद 1877द्ध के नोट्स के आधार पर लिखा है। पुस्तक एक प्रारंभिक मानवविज्ञान कार्य है और इसे परिवार के अर्थशास्त्र पर प्रथम प्रमुख कार्यों में से एक माना जाता है।

मार्क्स के बादए एंगेल्स ने आदिम समाज के कबीले संगठन पर कई तथ्यों को मॉर्गन की खोज के आधार पर खोज की जो समाज परिवार और राज्यों के विकास के बुनियादी बिन्दुओं को प्रस्तुत करता है। एंगेल्स ने इतिहास और मार्क्स के आर्थिक सिद्धांत के भौतिकवादी विधियों द्वारा ग्रीकए रोमनए प्राचीन आयरिशए और प्राचीन जर्मन इतिहास के अध्ययन पर आधारित प्रश्नों की व्याख्या करता है। चौथे संस्करण (1890.91द्ध के प्रकाशन में एंगेल्स ने उसमें पर्याप्त परिवर्तन और परिवर्धन किया। यह विशेष रूप से परिवार के अध्याय पर और उसके अंतिम संस्करण में उसने डण्ड. ज्ञवअंसमअेापप के निष्कर्षों का भी प्रयोग किया। इस किताब में आधुनिक समाज के संबंधो में एंगेल्स ने संस्कृति व उत्पादनों के आधार पर उसके वर्गीय चरित्र को दिखाया है।

मानव समाज के इतिहास के वास्तविक घटनाओं को देख एंगेल्स ने इसके उत्पत्ति की व्याख्या के लिये मार्क्स के भौतिकवादी विधि का उपयोग करता है। परिवारों के गठन, तर्क और विस्तार को मॉर्गन ने जो विचार दिये हैं उसका उदय वर्ग समाज के उदय का परिणाम है । राज्य की तरह ही परिवार को भी एक छोटे से सत्तारूढ़ वर्ग अपनी संपत्ति पर नियंत्रण बनाए रखने के रुप में प्रयोग करता है।

आदिम समाज शिकारी-संग्राहक समाज था जिसमें श्रम का एक यौन विभाजन अस्तित्व नहीं था ।महिलाएँ पुरुषों के साथ आम तौर पर शिकार और खेती में समान रुप से भागीदारी करती थी। पुरुषों और महिलाओं के बीच व्यवस्थित असमानता मौजूद नहीं थी। दोनों के कार्यों के उच्च मूल्य समान था। संपत्ति की अवधारणा का विकास नहीं हुआ था।

परन्तु कालांतर में असमानता में वृद्धि निजी संपत्ति के अवधारणा के साथ आया था जो मुख्य रूप से पुरुषों के उत्पादन के क्षेत्र को नियंत्रित करने के लिए था । उवदवहंउवने परिवार का मतलब है कि इसके द्वारा संपत्ति पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित किया जा सके और शादी की संपत्ति का संबंध समाज और राज्य के साथ बढ़ता गया।

जैसे-जैसे श्रम की अतिरिक्त मांग बढ़ी वैसे-वैसे परिश्रम की मांग उठी । अब महिलाओं को अधिक परिश्रम करने के लिए अधिक बच्चों का उत्पादन का साधन बनाया गया । ऐसे में महिलाओं को घरेलु कार्यों से संबंध किया जाने लगा । दूसरे शब्दों मेंए पुरुषों और महिलाओं के बीच श्रम का विभाजन नहीं बदला है लेकिन उत्पादन घर से बाहर ले जाया गया था और इस उत्पादन पर पुरुषों का अधिकार हुआ। क्योंकि पुरुष बाहर के कार्यों को संपन्न करता है।

एंगेल्स ने इस किताब में यह बतलाया है कि पूर्व मानव समाज के जीवन में उवदवहंउवने परिवार की तरह कुछ भी नहीं थे और वहां महिलाओं और पुरुषों के मध्य यौन स्वतंत्रता विधमान थी।

एंगेल्स सत्ता के सामाजिक संबंधों के महत्व पर जोर देता है और भौतिक संसाधनों पर नियंत्रण के बजाय "आदिम" लोगों की मनोवैज्ञानिक कमियों पर ध्यान केन्द्रित किया । मॉर्गन और एंगेल्स दोनो ने जैसे "जंगली" और "बर्बरता" शब्दों के प्रयोग में इसे नकारात्मक नहीं माना । उसके तीन मुख्य चरणों के रूप में निर्धारित हैं जो इस प्रकार से है:-

1.ँअंहमतल (जंगली) दृ इस अवधि में मानव प्राकृतिक अवस्था में उत्पादों का एकत्रीकरण व जमा करता था और मानव कला ही उत्पादों को जमा करने का मुख्य उपकरण था जो इस विनियोग में सहायता कर रहे थे।

2. ठंतइंतपेउ (बर्बरता) - इस अवधि के दौरान मनुष्यों ने घरेलू पशुओं के नस्ल को सुधारने और कृषि अभ्यास को सीखा और मानव गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने के तरीकों का अधिग्रहण किया।

3ण बपअपसप्रंजपवद (सभ्यता) - इस अवधि में आदमी प्रकृति के उत्पादों को बढ़ाने के नये नये उन्नत तकनीकों की खोज करता है और अपने कला व दक्षता का संवर्धन करता है।

इस पुस्तक में एंगेल्स का यह प्रयास रहता है कि जिस तरह से परिवार को परिभाषित किया गया है और जिस नियम के द्वारा यह नियंत्रित होता है उसके परिवर्तन को उसके चरणों के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया ।

एंगेल्स के पुस्तक में नौ अध्याय हैं। पहला और दूसरे अध्याय में सबसे प्राचीन काल के लोगों के लिए जीवन की स्थितियों का विश्लेषणए कबीलाई संरचना की वृद्धि तक का वर्णन है। एंगेल्स ने वर्ग समाज में परिवार और वैवाहिक संबंधों के विकास और बुर्जुआ परिवार की आलोचनात्मक रुप से जांच की । आदि मानव से आधुनिक मानव के बदलाव में श्रम एक प्रमुख भूमिका निभाया। एंगेल्स ने यहां मानव इतिहास में आदिम समाज को मार्क्सवादी सिद्धांतो के आधार पर आधुनिक मानव से अलग माना है । इस सिद्धांत के अनुसार परिश्रम एक प्रमुख साधन है जो मनुष्यों को पशुओं से अलग करता है जो मानव जीवन का प्रधान और मूलभूत शर्त है।

इस पुस्तक के अध्याय 3 और 9 तक एगेंल्स समाज के आधारभूत सामाजिक संगठन के रुप में पूर्व वर्गीय समाज के संरचनात्मक सेल को समझाने का प्रयास करता है। य़ह पता लगाता है कि पूर्व कबिलाई समाज का कम्युनिज्म किस प्रकार से कार्य करता है। एगेंल्स ने दिखाया कि कुल (ब्ल।छद्ध व्यवस्था के क्षरण का अनुकरण कर आर्थिक परिस्थितियाँ किस प्रकार से सभ्यता के विकास से जुड़ी रही। उसने यह भी पता लगाया कि उत्पादक बलों के विकासए श्रम के विभाजन और परिश्रम की वृद्धि की उत्पादकता एक व्यक्ति के परिश्रम के उत्पादों को अन्य व्यक्ति के उत्पादों के तुलना द्वारा होता है और इसके उपरांत समाज में शोषण का दौर शुरु होता है। परिणामस्वरुप समाज शत्रुता रुपी वर्गों में विभाजित हो जाता है।

शोषण वर्ग के साधनों के रूप में राज्य के उद्भव के द्वारा बुर्जुआ वर्ग सर्वहारा वर्ग को नियंत्रण करता है । शोषण के रूप में वह राज्य के विभिन्न विशिष्ट रूपों की जांच कर एंगेल्स ने वर्ग चरित्र का खुलासा किया और बुर्जुआ राज्य के आगे के विकास में उसके शोषण प्रवृत्तियों का विश्लेषण करता है । हालांकि वह नोट करता है कि लोकतांत्रिक स्वतंत्रता अकेले श्रमिकों की मुक्ति के लिए नेतृत्व के रूप में लंबे समय के रूप में पूंजीवाद को संरक्षित नहीं कर सकते। उसने इस बात पर बल दिया कि सर्वहारा समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए व संघर्ष करने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करने और अधिकतम करने में लोकतांत्रिक अधिकारों का विस्तार करना चाहिए ।

परिवारए निजी संपत्ति और राज्य के उत्पत्ति में एंगेल्स ने दिखाया है कि आदिम समाज का विघटन विभिन्न प्राकृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों के अंतर्गत भिन्न-भिन्न रूपों में होता है। विघटन के मूल सामग्री वर्ग समाज में पूर्व वर्ग के समाज के परिवर्तन में सभी देशों और लोगों के लिए एक ही है। तथापि यह विश्लेषण ऐतिहासिक एकताए प्रगतिशील विकास और सामाजिक जीवन के रूपों के तार्किक उत्तराधिकार के विषय में द्वंद्वात्मक भौतिकवादी प्रस्ताव की पुष्टि करता है।

एंगेल्स ने इस पुस्तक में राज्य पर मार्क्सवादी सिद्धांत के विकास में एक महत्वपूर्ण मंच का प्रतिनिधित्व किया। इस सिद्धांत को लेनिन ने नई ऐतिहासिक परिस्थितियों के लिए मुख्य रूप से अपने राज्य और क्रांति में प्रयोग किया।

इस प्रकार एंगेल्स ने इस पुस्तक के द्वारा शोषक वर्ग के ऊपर खड़े बल के रूप में राज्य के बुर्जुआ धारणाओं के खिलाफ तर्क प्रस्तुत किया है और आर्थिक कारणों की वजह से परिवार, समाज और राज्य के शोषणकारी वर्गीय चरित्र निर्धारित होता है और इसे इस पुस्तक में दिखलाकर सभी नागरिकों के हितों की रक्षा का प्रयास किया गया है।

Bibliography:-

शर्मा, डा. प्रभुदत्त (2010), "पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास (प्लेटो से मार्क्स) " कालेज बुक डिपो, जयपुर।

संधु, ज्ञान सिंह (1985), " पास्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविधालय, दिल्ली।

सेबाइन, जार्ज. एच (1982), "राजनीतिक दर्शन का इतिहास (अनुवादित), विश्व प्रकाश गुप्त प्रकाशन, दिल्ली।

डग, लारिमर (2001), "एतिहासिक भौतिकवाद का मूल सिद्धांत, ग्रंथ शिल्पी इंडिया, दिल्ली।

Miliband, Ralph(1977), "Marxism and Politics" , Oxford university,press oxford.

Evans,Micheal (1975), "A contribution to the critique of Political economy", Allenand onvien, London.

Randhir singh(2005), "Crisis of Socialism", Ajanta book International, new Delhi.

Lenin,I.v(1964), "The Three source and three component part of Marxism [online Web] url:- http://www.wcpa.org/-

Engels,Frederick(1884), "The Origin of the Family, Private Property and the State"[online Web] https://www.marxists.org/archive/marx/works/download/pdf/origin_family.pdf